तिरुचि दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

अंक : 6
2023 जनवरी

இதழ் : 6
2023 ஜனவரி

ISSUE : 6
2023 January

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
नं 1 विल्लियम्स रोड, कन्टोनमेंट, तिरुच्चिराप्पल्लि 620 001

CHIEF COMMISSIONER OF CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE,
NO.1, WILLIAMS ROAD, CANTONMENT, TIRUCHIRAPPALLI 620 001

श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि द्वारा नीति अनुभाग, विधिक एवं समीक्षा अनुभाग तथा आगंतुक विश्रांतिका का नवीनीकरण के बाद उद्‌घाटन।

तिरुचिच दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि

CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 6 2023 जनवरी	இதழ் : 6 2023 ஜனவரி	ISSUE : 6 2023 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு

திருவள்ளுவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार।।

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद – मु.गो. वेंकटकृष्णन)

प्रधान संपादक	Editor-in-Chief
श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि	Smt. Jane K.Nathaniel, Chief Commissioner, Customs (Preventive) Zone Tiruchirappalli
प्रबंध संपादक	Managing Editor
श्री के.वी.वी.जी दिवाकर आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि श्री डी. अनिल आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि	Shri K.V.V.G. Diwakar Commissioner, Custom House Tuticorin Shri D. Anil Commissioner, Customs (Preventive), Trichy

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

जेन के. नथानियेल	मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रधान संपादक
के.वी.वी.जी. दिवाकर	आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	प्रबंध संपादक
डी. अनिल	आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रबंध संपादक
पी. राम मोहन	अपर आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रबंध संपादक

संपादक

डॉ. प्रवीण गवास्कर	उपायुक्त मु आ कार्यालय	सर्वकार्यभारी संपादक
हिन्दी		
देवेन्द्र सिंह सिकरवार	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मु आ कार्यालय	
तमिल		
जी वेंकटसुब्रमणियन,	सहायक आयुक्त सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	
अंग्रेजी		
रजनीश कुमार सिंह	अधीक्षक, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Jane K. Nathaniel	Chief Commissioner, Customs (Preventive)	Editor in Chief
K.V.V.G Diwakar	Commissioner, Custom House, Tuticorin	Managing Editor
D. Anil	Commissioner, Customs (Preventive),Trichy	Managing Editor
P. Ram Mohan	Additional Commissioner, CC(P) Office	Managing Editor
Editors		
Dr. Pravin Gavaskar	Deputy Commissioner CC Office Trichy	Editor in over all charge
Hindi		
Devendra Singh Sikarwar	Senior Translation Officer, CC Office Trichy	
Tamil		
G. Venkatasubramanian,	Assistant Commissioner, Customs Hqrs., Trichy	
English		
Rajnish Kumar Singh	Supdt., Customs Hqrs., Trichy	

The articles appearing in Tiruchy Darpan do not necessarily reflect the view of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statement rests with the authors.

जेन के. नथानियेल
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक की कलम से ....

यह हर्ष का विषय है कि विभागीय त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के छठे अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है । राजभाषा के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विभागीय पत्रिकाओं के माध्यम से जहाँ एक ओर विभाग के कार्यकलापों की जानकारी साझा की जाती है वहीं दूसरी ओर अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। मूल रचनाओं की दृष्टि से पत्रिकाओं का सृजन महत्वपूर्ण होता है। यह त्रिभाषी पत्रिका है अर्थात हिंदी अंग्रेजी एवं तमिल भाषा की रचनाएं इसमें शामिल की गई हैं। पत्रिका को सूचनाप्रद बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। पत्रिका के छठे अंक के प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(जेन के. नथानियेल)
मुख्य आयुक्त

के.वी.वी.जी. दिवाकर

आयुक्त

प्रबंध संपादक की कलम से ....

सीमा शुल्क जोन की पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के प्रकाशन के क्रम में इस वर्ष छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं संपादक मंडल एवं उन सभी रचनाकारों की सराहना करता हूँ जिनके अथक प्रयासों से पत्रिका को अंतिमरूप मिला है। पत्रिका में अधिकारियों के परिजनों की रचनाएँ भी शामिल की गई है तथा छायाचित्रों द्वारा कार्यालय के कार्यकलापों से अवगत कराया गया है। आशा है पिछले अंक की तरह यह अंक भी आपको रुचिकर लगेगा। पत्रिका के बारे में आपके सुझावों का स्वागत है।

के.वि.वि.जि.दिवाकर

(के.वी.वी.जी. दिवाकर)

आयुक्त

सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि

डी. अनिल
आयुक्त, सीमा शुल्क
(निवारक)

प्रबंध संपादक की कलम से ....

यह जानकर कि "तिरुच्चि दर्पण" के छठे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है, मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी यह ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है। इसमें हिंदी, अंग्रेजी एवं तमिल भाषा में रचनाओं का समावेश है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की भूमिका अहम होती है। इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों एवं उनके परिजनों को भी अपनी साहित्यिक प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ है। संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। कृपया पत्रिका के बारे में अपने बहुमूल्य सुझाव साझा करें।

डी॰ अनिल

(डी. अनिल)
आयुक्त, सीमा शुल्क
(निवारक)

पी. राम मोहन

अपर आयुक्त (मुआका)

प्रबंध संपादक की कलम से ....

विभागीय पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" का प्रकाशन मुझे खुशी की अनुभूति दे रहा है। पत्रिका के प्रकाशन में न केवल अधिकारियों/कर्मचारियों ने योगदान दिया है अपितु उनके परिजनों ने भी यथायोग्य योगदान दिया है। सभी के साझा प्रयासों के फलस्वरूप "तिरुच्चि दर्पण" का छठा अंक आपके सामने प्रस्तुत है। मैं उन सभी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहभागी बने हैं तथा सभी से अनुरोध करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग प्रदान करते रहें। पाठकों से अनुरोध है कि वे पत्रिका की गुणवत्ता के विषय में अपने विचार अवश्य व्यक्त करें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

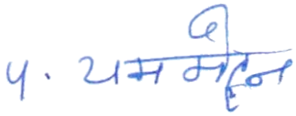

(पी. राम मोहन)

अपर आयुक्त (मुआका)

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

திருக்குறள் । तिरुक्कुरल

मु.गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए. अवकाश प्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथ का दोहा छंद में अनुवाद किया है । तमिल मूल तथा नागरि लिपि में अनुवाद किए तिरुक्कुरल का अध्याय ५ नीचे प्रस्तुत है ।

அதிகாரம் - 5
வாழ்க்கைத் துணை நலம்

மனைத்தக்க மாண்புடையள் ஆகித்தற்
கொண்டான் வளத்தக்காள் வாழ்க்கைத்
துணை

மனை மாட்சி இல்லாள்கண் இல்லாயின்
வாழ்க்கை எனைமாட்சித் தாயினும் இல்.

இல்லதென் இல்லவள் மாண்பானால்
உள்ளதென் இல்லவள் மாணாக் கடை.

பெண்ணிற் பெருந்தக்க யாவுள
கற்பென்னும் திண்மையுண் டாகப் பெறின்

தெய்வந் தொழாஅள் கொழுநன்
தொழுதெழு வாள் பெய்யெனப் பெய்யும்
மழை;

தற்காத்துத் தற்கொண்டாற் பேணித்
தகைசான்ற சொற்காத்துச் சோர்விலாள்
பெண்

சிறைகாக்குங் காப்புஎவன் செய்யும் மகளிர்
நிறைகாக்குங் காப்பே தலை

பெற்றான் பெறின்பெறுவர் பெண்டிர்
பெருஞ்சிறப்புப் புத்தேளிர் வாழும் உலகு.

புகழ்புரிந்த இல்லிலோர்க்கு இல்லை
இகழ்வார்முன் ஏறுபோல் பீடு நடை

மங்கலம் என்ப மனைமாட்சி மற்று அதன்
நன்கலம் நன்மக்கட் பேறு.

பெறுமவற்றுள் யாமறிவது இல்லை
அறிவறிந்த மக்கட்பேறு அல்ல பிற

எழுபிறப்பும் தீயவை தீண்டா பழிபிறங்காப்
பண்புடை மக்கட் பெறின்

अध्याय - 5
सह धर्मिणी उत्कर्ष

गृहिणी गुण गण प्राप्त कर, पुरुष आय अनुसार ।
जो गृह-व्यय करती यही, सहधर्मिणी सुचार।।

गुण- गण गृहिणी में न हो, गृह्य कर्म के अर्थ
सुसंपन्न तो क्यों न हो, गृह-जीवन है व्यर्थ ।।

गृहिणी रही सुधर्मिणी, तो क्या रहा अभाव।
गृहिणी नहीं सुधर्मिणी, किसका नहीं अभाव।।

स्त्री से बन कर श्रेष्ठ ही क्या है पाने योग्य।
यदि हो पातिव्रत्य की दृढ़ता उसमें योग्य।।

पूजे सती न देव को पूज जगे निज कंत।
उसके कहने पर 'बरस' बरसे मेघ तुरंत ।।

रक्षा करें सतीत्व की, पोषण करती कांत।
गृह का यश भी जो रखे, स्त्री है वह अश्रांत ।।

परकोटा पहरा दिया, इनसे क्या हो रक्ष |
स्त्री हित पातिव्रत्य ही होगा उत्तम रक्ष ।।

यदि पाती हैं नारियाँ, पति पूजा कर शान ।
तो उनका सुरधाम में होता है बहुमान।।

जिसकी पत्नी को नहीं, घर के यश का मान ।
नहि निन्दक के सामने, गति शार्दूल समान।।

गृह का जयमंगल कहें, गृहिणी की गुण-खान |
उनका सद्भूषण करें, पाना सत्सन्तान ।।

बुद्धिमान सन्तान से बढ़ कर विभव सुयोग्य
हम तो मानेंगे नहीं हैं पाने के योग्य।।

सात जन्म तक भी उसे छू नहिं सकता ताप ।
यदि पावे संतान जो, शीलवान निष्पाप ।।

अमित कुमार,
अधीक्षक

हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता, तिरुच्चिराप्पल्लि में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध

मानव जीवन विविधताओं से भरा है। मानव जीवन में कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते-करते नीरसता व उबान जाती है। इस परिस्थिति में त्योहार जीवन में सुखद आनंद लाते हैं हर्षोल्लास तथा नवीनता का संचार करते हैं। मानव आदिकाल से ही उत्सवप्रिय रहा है। त्योहार आदिवासियों से लेकर आधुनिक विकसित समाज में समान रूप से महत्व रखते है। त्योहार समस्त दुखों एवं अवसादों को भुलाकर मानव जीवन में खुशियाँ भर भर देते हैं।

त्योहारों के प्रकार

विश्व में भारत ही ऐसा देश है जिसे उत्सवों का देश कहा जाता है। कोई भी महीना ऐसा नहीं है जिसमे कोई छोटा-बड़ा पर्व ना आता हो। भारत में त्योहारों को मुख्यरूप से 3 भाग में बाटा गया है।

I) धार्मिक पर्व:- भारत में धार्मिक पर्व मान्यताओं एवं परम्पराओं के आधार पर मनाए जाते हैं। दशहरा, दीपावली, होली आदि हिंदुओं के, ईद मुहर्रम मुसलमानों के क्रिसमस, ईस्टर ईसाइयों के गुरुनानक जयंती, महावीर जयंती क्रमश: सिख, जैन व बौद्धों के प्रमुख पर्व हैं।

ii) राष्ट्रीय पर्व – स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस एवं गांधी जयंती राष्ट्रीय पर्व हैं जिन्हें सभी धर्मों के लोग मिल कर मनाते हैं।

iii) मौसमी या स्थीनीय पर्व – ये पर्व फसलों की कटाई या मौसम परिवर्तन के समय मनाए जाते हैं। कुछ त्योहरों को सीमित क्षेत्र में मनाए जाने के कारण स्थानीय पर्व कहा जाता है। जैसे – तमिलनाडु का पोंगल, केरल का ओणम, झारखंड का करमा, उ.प्र व विहार का छठ, असम का बिहु स्थीनीय पर्व हैं। बसंत पंचमी एवं शरदपूर्णिमा मौसम परिवर्तन के द्योतक हैं।

त्योहारों का महत्व.- भारतीय जीवन में त्योहारों का सांस्कृतिक, सामाजिक ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक एवं राजनैतिक महत्व है।

1) सांस्कृतिक महत्व:- भारतीय समाज को वर्णाश्रम में विभाजित किया गया है। इनमें विविधता होते हुए भी एकरूपता है। जिसका प्राण प्रेम है। हमारी संस्कृति के समन्वयपरक होने के कारण विभिन्न वर्ण व धर्म के हर त्योहार उत्साह व उल्लास से मनाए जाते हैं। हमारी संस्कृति की पूंजीभूत उत्कृष्टता त्योहारों के रूप में ही प्रस्फुटित होकर हमें उदार एवं कर्तव्यपरायण बनाती है।

सामाजिक महत्व:- त्योहार सामाजिक धरोहर एवं संस्कृति के परिचायक होते हैं, ये सामाजिक परंपराओं के साथ-साथ, समाज, राज्य व राष्ट्र के लिए कोई न कोई संदेश जरूर देते हैं जैसे-विजयदशमी का त्योहार -असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म का विजय का संदेश देता है साथ ही यह याद दिलाता है कि चरित्रहीनता भारतीय समाज को बर्दाश्त नहीं है। दिवाली मेंकेवल तेल का दीपक नहीं जलता बल्कि आंकाक्षाओं का भी दीपक जलता है, यह अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का संदेश देता है। रक्षाबंधन / भैयादूज भाई-बहन के पवित्र प्रेम का संदेश, होली आपसी कटुता एवं वैमनस्यता को भुलाकर आपस में प्रेम करने की सीख देता है। क्रिसमस पाप, अंधकार से दूर हो जाने का संदेश तो ईद भाई-चारे का संदेश देता है। इस प्रकार हरेक पर्व में समाजोत्थान के लिए कोई न कोई उद्देश्य अवश्य निहित होता है। सभी पर्व देश की अनेकता में एकता का संदेश पूरे विश्व को देते हैं।

ऐतिहासिक महत्वः- त्योहारों का संबंध राष्ट्रीय धरोहर, महत्वपूर्ण घटना, व्यक्ति, स्थान से जुड़ा होता है। त्योहारों के द्वारा हम महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को ताजा करते हैं तथा भावी पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार त्योहार किसी जाति, धर्म एवं देश के वर्तमान एवं अतीत के साथ संबंध जोड़ने का उत्तम साधन है। यह हमें अतीत से सीख लेकर वर्तमान की चुनौतियों से लड़ने की सीख देते है।

I) मनोवैज्ञानिक महत्वः- पर्व हमारे पारिवारिक जीवन में शुद्धता, सरसता व मधुरता लाते है। मानसिक तनाव से दूर रखने में सहायक होते हैं। मानव जीवन में पग-पग पर संदेश व प्रेरणा देते है। मन को पवित्रता एवं शांति प्रदान करते हैं. त्योहारों के अवसर पर छुट्टियाँ होने के कारण, लोग एक-साथ रहने, खाने-पीने का आनंद लेते है। त्योहार दान देने एवं सत्कर्म करने की परंपरा को बनाए रखने में मदद करते हैं।

ii) राजनैतिक महत्व - आज के परिवेश में त्योहारों का राजनैतिक महत्व सर्वाधिक है। आज सभी दल सभी धर्मों के लोगों को रिझाने व अपने में पक्ष में करने के लिए हरेक तरह के हथकंडे अपनाते हैं। वे सार्वजनिक तौर पर विभिन्न धर्म के पर्व मनाते हैं। उनके पर्वों में शिरकत भी करते हैं। यदि किसी दल का नेता किसी धर्म को नहीं मनाता है या अन्य धर्म के त्योहार पर शुभकामना नहीं देता है तो उसको विपक्षी दल उक्त धर्म का विरोधी कहने लगते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि त्योहार, नेताओँ और त्योहार मनाने वाले लोगों को अपनी धरती की सोंधी खुशबू से जोड़ने का सार्थक प्रयास करते हैं।

त्योहारों की महत्ता में कमी - समय के प्रवाह में त्योहारों के मनाने में कुछ दोष भी आ गए हैं। जैसे कुछ त्योहारों पर पशुओं की बलि देना, पटाके चलाना, शराब पीना त्योहारों के वास्तविक उद्देश्य से दूर ले जाता है। आज त्योहार शक्ति प्रदर्शन का अंग बन गए हैं। धार्मिक उन्माद में लोग साम्प्रदायिक दंगे करने लगते हैं। हमें समाज से इन दोषों को दूर करना चाहिए ताकि त्योहारों का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सके।

उपसंहारः- त्योहार परस्पर एकता, अखंडता, राष्ट्रीयता एवं भाईचारे का पाठ पढ़ाते हैं तथा जीवन में प्रेम, आनंद उत्साह जैसे सद्गुण भर देते हैं।

सुशांत मोहन सक्सैना
अधीक्षक
सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि

हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता,तूत्तुक्कुडि में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध

आजादी के 75 वर्ष

भारत की आजादी के 75 वर्ष हो रहे हैं। इन 75 वर्षों में देश ने जीवन के हर क्षेत्र में अनगिनत उपलब्धियां हासिल की हैं। सामाजिक जीवन हो या अर्थव्यवस्था शिक्षा हो या स्वाथ्य, धरती, जल हो या आसमान या फिर रक्षा क्षेत्र, हर जगह भारत का तिरंगा लहराया है। 75 साल की यात्रा जितनी शानदार रही है, उससे कहीं ज्यादा अनगिनत लोगों का योगदान शामिल रहा है।

15 अगस्त 1949 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के साथ ही एक आजाद देश के रूप में भारत ने अपनी प्रगति की यात्रा शुरू की। हमारे देश ने कृषि क्षेत्र से लेकर परमाणु और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तक, स्वास्थ्य सेवाओँ, बायोटेक्नोलोजी से लेकर आईटी पावर के रूप में उभरने तक का सफर तय किया है । आजादी के बाद भारत ने स्वतंत्र भारत में अपनी सबसे पहली उपलब्धि तब हासिल की जब 26 जनवरी 1950 को हमारा अपना संविधान लागू हुआ। इसके साथ ही अंग्रेजों के जमाने का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 समाप्त हो गया।

भारत के विकास में पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत मील का पत्थर साबित हुई हैं। पहली पंचवर्षीय योजना 1951 में संसद में पेश की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य प्राइमरी सैक्टर का विकास करना था । भारत में हरित क्रांति की अगुवाई मुख्य तौर पर एम एस स्वामीनाथन ने की थी। हरित क्रांति की वजह से भारत एक खाद्यान की कमी वाले देश की श्रेणी से उठकर दुनिया के अग्रणी कृषि पैदावार वाले राष्ट्र में शामिल हो गया है।

भारत ने 18 मई 1974 को पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण करके ही अपने सामर्थ्य से दुनिया को परिचय करा दिया था। लेकिन इसेक 24 वर्ष बाद 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में एक के बाद एक करके 5 परमाणु परीक्षण किए तो विश्व भारत का लोहा मानेन को मजबूर हो गया।

देश में वस्तु एवं सेवा कर व्यवस्था की शुरुआत 1 जुलाई 2017 से भारत के तत्कालीन राष्ट्रपिति माननीय प्रणव मुखर्जी और प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी के कर कमलों द्वारा हुयी। इस व्यवस्था के द्वारा देश में कर प्रणाली की विसंगतियों को दूर कर दिया गया है। जिसका उददेश्य **One Nation One Tax** है।

इस 75 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा में भारत के नागरिकों को बहुत से बलिदान भी देने पड़े है। हाल में ही साल 2020 में भारत सहित दुनिया के समस्त देशों ने कोविड जैसी महामारी का सामना भी किया है। भारत सरकार और नागरिकों के प्रयास से भारत वर्ष इस महामारी को हराने में सक्षम रहा है। आज हम सभी भारत वर्ष के नागरिकों को अपने देश, सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है।

मशवरा

मुझे मशवरा वो दे रहीं, कि उनको भूल जाऊँ मैं ,
जो तेरी आँखों में हो नमी, फिर कैसे मुसकुराऊँ मैं।।

वो ख्वाब ही में आ मिलें, हूँ मैं इसी उम्मीद में ,
है आंखों में पर नींद कम, भला इनको कैसे सुलाऊँ मैं।
जिसे कहते थे ये लब मेरे, मेरी जान तू, अरमान तू,
वो बदल गया तो क्या हुआ, उसे बेवफ़ा कैसे बुलाऊँ मैं।।

वो रेत पर लिखा था जो, तूने प्यार से, कभी नाम मेरा,
लहर जिसे मिटा गयी, जेहन से कैसे मिटाऊँ मैं।।

मेरे दिल में इक चिराग है, तेरी यादों का, तेरे वादों का,
जल रहा जो दिल भी तो, चिराग कैसे बुझाऊँ मैं ।
क्यूँ दे रही तुम मशवरा ? कि तुमको भूल जाऊँ मैं।

मुरारी जी

धीरज कुमार वर्मा
कर सहायक

बचपन की स्मृति

वो कच्ची माटी का प्यारा घर,
वो माँ की ममता का प्रेम भारा आँचल,
वो मित्रों संग खेलकूद, मनुहार मधुर,
हँस-खेल न जाने कब बीत गया बचपन।

वो माँ का हाथ थाम प्रातः पाठशाला को जाना,
वो ग्रीष्मकाल की छुट्टी में नानी के घर को जाना,
वो बारिश में कागज की नाव को तैराना,
वो शीतकाल की रातों में दादी का कहानियाँ सुनाना।

वो छोटी-छोटी गलतियों पर पिताजी का समझाना,
वो होली में अपनों को जी भरकर रंग लगाना,
वो दशहरे के मेले में, सब के संग घूमने जाना,
वो मेले के उपहारों में जीवन का सब सुख पाना।

चाहता हूँ, फिर से माँ के आँचल से लिपट सो जाना,
फिर से मातृभूमि और माँ के अमूल्य सानिध्य को पाना,
अंतर्मन में है स्मृति शेष, मुश्किल है उसे भुलाना।
चाहता हूँ फिर से जीवन के उस कालखंड को दोहराना।।

सुरेन्द्र महतो
अधीक्षक

मैं बोझ नहीं हूँ।

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा
चलते-चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा ।।
अंधेरे से डर लगता है सीने से लगा लो न पापा
मम्मी तो सो गई ही आप ही थपकी दे कर सुलाओ न पापा।

स्कूल तो पूरी हो गई अब कॉलेज जाने दो न पापा
पाल-पोस कर बड़ा किया, अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली में बिठा ही दिया तो, आंसू तो मत बहाओ न पापा।

आपकी मुस्कराहट अच्छी है एक बार मुस्कराओ न पापा
आप ने मेरी हर बात मानी, एक बात और मान जाओ न पापा।
इस धरती पर बोझ नहीं मैं, दुनिया को समझाओ न पापा।

दिनेश प्रजापत
निरीक्षक

प्रकृति

माँ की तरह हम पर प्यार लुटाती है प्रकृति।
बिन माँगे हमें कितना कुछ दे जाती है प्रकृति ।।

दिन में सूरज की रोशनी देती है प्रकृति।
रात में शीतल चाँदनी लाती है प्रकृति ।।

भूजल से हमारी प्यास बुझाती है प्रकृति
और वर्षा में रिमझिम जल बरसाती है

दिन रात प्राणदायिनी हवा चलाती है प्रकृति
कहीं रेगिस्तान तो कहीं बर्फ वर्षाती है प्रकृति ।

बिन माँगे हमें भरपूर प्यार देती है प्रकृति
हे करुणामयी अनंत शक्ति, ससम्मान नमन तुझे प्रकृति
तेरे अनुकूल जीवन यापन में है मानव की सच्ची प्रगती।

सतीश कुमार पाण्डेय
भाई श्री आनंद कुमार पाण्डेय,
कर सहायक

खुद को पुकार तू

खुद से ही खुद को ललकार तू, स्वयं से जंग जीत के, जिन्दगी निखार तू। सोये पड़े साहसों के चट्टान तेरे सीने में, बस एक दफा पुकार तू। वेदना के महल सभी भस्मसात कर, बनकर अंगार तू। हो जायेगें जमींदोज बाधा- विघ्नों के पर्वत सभी, बस एक बार हूँकार तू। जकड़े है पाँव में बेड़ियाँ जो, उससे मुक्त होने को युद्ध कर आर पार तू। खुद से ही खुद को ललकार तू, स्वयं से जंग जीत के, जिन्दगी निखार तू। सामर्थ्य स्वयं से,स्वयं का जान तू, प्रत्यंचा स्वयं के पाप पर अब तान तू। जगत में मान अपमान नहीं, खुद ही अपमान तू, खुद सम्मान तू। न मुहँ मोड़ यूँ संघर्षो की भट्टी से, आने वाले वक्त का बन जा मान तू, स्वाभिमान तू।

समय के सरगम से हाथ मिला, बन जा कलकल करती नदियों के गान तू। एक लक्ष्य साध के, अब छोड़ अपनी कमान तू।खुद से ही खुद को ललकार तू, स्वयं से जंग जीत के, जिन्दगी निखार तू। तेरा रथ न कोई रोक सके, अपने हाथों बागडोर इस कदर थाम तू।शौर्य, समर्पण, साहस से सींच, वक्त बदलने की परिपाटी में अपना अमर कर नाम तू। स्वर्णिम दास्तान अंकित हो जाए ,ऐसा अद्भुत कर जा काम तू।छोड़ के परवाह जमाने की, अपने ही भुजदंडों पर जगमग कर दे धराधाम तू।भुला दो नींद--चैन सभी, मंजिल फतह के पहले कभी न कर आराम तू।खुद से ही खुद को ललकार तू, स्वयं से जंग जीत के, जिन्दगी निखार तू। ।।खुद को पुकार तू।।

जीवन नदी है।

जीवन नदी है, जिसे हर क्षण चलना है।
रथ पर आरूढ़ हो समय बदलता है।
पर्वत हो या हो खाई हर साँचे में ढ़लना है।
रुकने-झुकने का जिसमें नाम नहीं, सदा नई चाह लिए,नए स्फुरण संग निकलना है।
कभी हिम-शिखर बन थम जाना, कभी हिमनद बन पिघलना है।
कभी टकराना विपुल पाषाणों से, कभी उसे सूक्ष्म कंकण में बदलना है।
थमती नहीं रफ्तार कभी, पल-पल उमड़ती नई संवेदना है।
कभी शांत हो किनारे से निकलना, कभी जोर का मचलना है।
कहीं उत्तुंग गिरि से फिसलना, कहीं कदम-कदम संभलना है।
एक सिद्ध में साहस संजो, धार सभी संग लिए चलना है।
फिक्र किए बगैर बीते लम्हों की, सदा आगे निकलना है।
टूट जाऐंगे स्व के बंधन सारे, जिस घड़ी सागर से जा मिलना है। जंग जीत के, जिन्दगी निखार तू।

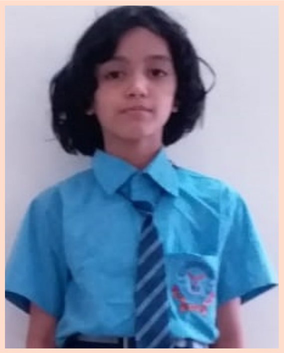

अस्मिता सिकरवार

पौत्री देवेन्द्र सिंह सिकरवार

"बच्चे मन के सच्चे"

हम बच्चे मन के सच्चे, आगे ही बढ़ते जाएंगे।
गुरु ज्ञान के पथ पर चल, भारत की शान बढ़ाएंगे।
आज जो दिखते नन्हे-मुन्ने, एक दिन बड़े हो जाएंगे।
हर मुश्किल को नन्हा कर, दुनिया को राह दिखाएंगे।

बाधाएं कब रोक सकी हैं पथ पर चलने वालों को
विपदाएं कब रोक सकी है, आगे बढ़ने वालों को।
सच्चाई की राह पकड़, औरो को राह दिखाएंगे।
हम मेहनतकश और दृढ़ रह कर, अपनी मंजिल पाएगें।

अपनी माटी अपनी भाषा, दोनों हमको प्यारी हैं।
निज भाषा में शिक्षा पाने की करली तैयारी है।
भारत की हर भाषा का, खोया सम्मान दिलाएंगे।
हम भारत के बच्चे हैं, भारत की शान बढ़ाएंगे।

ना बांटेगे, नहीं बटने देंगे, छोटे-छोटे मुद्दो पर।
जाति-पाति या धर्म-पंथ पर या लालच के वादों पर।
हम हैं संतति ऋषि-मुनियों की सबको याद दिलाएंगे।

हम भारत के बच्चे हैं, भारत की शान बढ़ाएंगे।।

"वंदे मातरम"

S. Shruta Kirti MA (Eng.Lit.) I st Year,

D/o. Shri B. Suresh Kumar,

Superintendent of Customs, Custom House, Tuticorin.

All dreams have wings.
Some fly high throughout.
Others ripped before their birth.
And yet some others,
The truly remarkable ones.
Those dreams that are burnt.
Slashed off their chains of hope.
And like how Rome
The City built on ashes,
Those dreams would rise from the char
elegantly.
Like it had never knew what it is to be scarred.
And those would soar higher, past everything
Past the blue sky and the blinding sun.
Past the poppy field and the mortals.
Past this confined inhabitation.
Past every unimaginable obstacle.

Shri B. SURESH KUMAR,
Superintendent of Customs,
Custom House, Tuticorin.

CORRUPTION FREE INDIA FOR A DEVELOPED NATION

Despite all the scientific and technological advancements made by countries of the world, it is a stark reality that the omnipresent scourge of corruption continues to be a global phenomenon. It is an undisputed fact that the tentacles of corruption have been fairly entrenched in India also. The progress of any nation is measured by the progress made in terms of the Social Development Indices. Generally, it has been observed that countries that are more corrupt tend to have either slow or stagnant economies.

As mentioned above, the prevalence of corruption is directly proportionate to its social, economic and political development. As per the survey conducted by the Transparency International, a global NGO, in 2021, in terms of the Corruption Perception Index (CPI) – Denmark, Finland, Sweden, Singapore and New Zealand which were developed countries were the least corrupt. In contrast Senegal, Syria, South Sudan and Somalia – the countries which were under developed countries, were the most corrupt. As per the said survey, India was ranked as the 85th most corrupt nation out of a total of 180 nations.

It is a harsh reality that a nation that aspires to become a developed one, needs to improve the social and economic condition of its citizens thereby raising their standard of living. It is a bitter truth that a vast majority of our countrymen are below the poverty line with 80% of them having only one square meal a day. Corruption has affected the poor immensely. The unholy nexus between corrupt politicians and bureaucrats have resulted in siphoning off these essential goods and services provided by the Governments through various social development schemes intended for the poorest of the poor as a result of which they continue to be impoverished. The same holds true in the fields pertaining to health, education and sanitation facilities where the essential goods/services have not percolated down to those strata of society who actually need/deserve them.

Corruption exists in India mostly in the form of money laundering and bribery. Unemployment which is prevalent mostly in Urban India is yet another challenge faced by us. While many citizens do not get the job they deserve, others have to bribe officials/give donations to the top officials of Government departments to secure a job. A country aiming to be a developed nation cannot achieve the same if the vast majority of its population are exploited and under-nourished. Hence, it is imperative for any government of the day to uplift the living conditions of its citizens.

Needless to say, the most vital aspect of a developed nation is its economic development. Corruption acts as a deterrent for economic growth and development which prevents both domestic and foreign investments. Added to the same, it is important for Governments of the day to reduce high taxation rates, clear bureaucratic hurdles and end red-tapism for the economy to record a significant growth. Although India have high reserves of foreign exchange, corruption has caused deterioration of the Current Account Deficit (CAD) which is another impediment to increasing its Gross Domestic Product (GDP).

Alongwith GDP, what matters most for a developed nation is Gross Happiness Index (GHI) of its citizens. In addition to the above parameters, this is possible only through proper maintenance of law and order machinery and an effective judiciary. Sadly, the tentacles of corruption have also permeated the judiciary. India can certainly become a developed nation if the vast sources of black money stashed abroad can be recovered and brought to light. It is estimated that the mind-boggling amounts of illegal tender that is stashed abroad, is enough to feed the impoverished of the country.

The eradication of corruption is instrumental in propelling India to a developed nation. Some of the following steps could go a long way in effectively countering the menace.

- Increasing the level of awareness of the general public by imparting value based education;
- Devising effective preventive mechanisms with people of integrity to implement social schemes/programmes;
- Developing transparency in the system by way of introduction/promoting E-Governance;
- To introduce/develop an effective Audit and Grievance Redressal Mechanism at all tiers of governance.

The path of India to the status of a developed nation can be achieved only with the collective efforts of all stake-holders. A change/amendment in economic policies featuring low tax-rates, introduction of easy laws and simplification of government rules would produce the desired results. Former Prime Minister Rajiv Gandhi famously remarked that for every 100 paise ear-marked for developmental schemes, only 18 paisa reach the actual beneficiaries. Hence, it is utmost important that we plug the loop-holes in our Public Distribution System (PDS) so that the benefits of the schemes reach the lowest strata of the society.

With a Government known for its 'zero-level' tolerance for corruption at the helm of affairs coupled with the sustained efforts from the common man, the legislature, the executive, the judiciary, intellectuals and eminent persons from different walks of life taking up the cudgel against the malady of corruption, India is certainly poised to become the developed nation and a super-power by 2047 as envisioned by our Honourable Prime Minister.

*****

"JAI HIND"

Shri L.VIJAYARAGHAVAN
,Superintendent
Customs Adjudication

HOT, HOTTER, HOT (EARTH) TEST

Yes. Earth is at its hottest these days. As per IPCC climate report 2022, Earth's global surface temperature has increased by around 1.1 degree Celsius compared with the temperature levels in 1850-1900. Most importantly this temperature increase hasn't been witnessed since 1,25,000 years ago.

This increase in Earth's temperature is attributed to increased emission of Carbon through increased use of fossil fuels. We know that motor vehicles and industries emit carbon into atmosphere and quicken the heating up of Earth.

Thawing of Permafrost is also a major contributor to emission of greenhouse gases which contains Carbon. Perma....What? Permafrost.

Permafrost is a permanently frozen layer on or under Earth's surface. It consists of soil, gravel and sand, usually bound together by ice. A frozen Earth, to be classified as a permafrost, should remain at 0 degree Celsius or below for a continuous period of 2 years. Plant and Animal material frozen in Permafrost - called Organic Carbon- does not compose or rot away for years. The most ancient Permafrost ever dated is 7,40,000 years old.

As the Permafrost thaws, microbes which remained dormant for thousands of years, gets Oxygen from atmosphere and start decomposing the plant and animal materials thereby releasing Greenhouse gases.

Now, we want to know where these Permafrost are situated. Permafrost are often found in Arctic region, United States of America, Russia, China and Eastern Europe. OK... Not in India. What a relief! Not Really.

Thawing of Permafrost affect environment globally by releasing enormous amount of methane into atmosphere thereby increasing Earth's temperature, which leads to melting of glacier and resultant increase in sea level. When thawing of Permafrost happen, the ancient and dormant microbes like virus captured in the Permafrost for million of years gets released and can affect humans, cattle and plants. A theory propounded by environmentalists is that Novel Coronavirus is one such virus released due to thawing of Permafrost.

Government all over the world has acknowledged that thawing of Permafrost poses great danger to the lives and livelihood of humans. It is high time we, the people realise the real threat of thawing of Permafrost and do our bit to slow down the pace of this phenomenon by consciously taking steps to reduce the carbon emission.

Believe me. Hot Earth is not going to be a cool place to live.

Shri G.VENKATASUBRAMANIAN

Assistant Commissioner (Customs), Statistics Section, Trichy

WORKFORCE BURNOUT

Job burnout : Job burnout is a special type of work-related stress - a state of physical or emotional exhaustion that also involves a sense of reduced accomplishment and loss of personal identity.
Some experts define that physical exhaustion at the end of the work day is the real job burnout. Cynicism and detachment from superiors and colleagues, extreme dissatisfaction with work and uncertainty about how to improve and progress in future career can lead to job burnout.
Causes of job burnout:

A poor work culture: The attitude and morale of officers around us will directly impact our work. A lack of infrastructure and subordinates can also lead to job burnout. Without due promotion is the main reason of job burnout for Superintendents in GST and Central Excise.

A lack of work-life balance: If we are giving a lot of our energy and time to work, our personal life can suffer which can lead us to resent at the office.
High engagement with work: Being over-engaged with work can lead to feel a constant need to overwork and be involved with projects. This leads to stressful situations and emotional exhaustion.

Effects of job burnout: Officers affecting with workplace burnout symptoms and job stress are often impacted in following ways

Physical health issues:

Excessive stress, Fatigue, Increase risk level of heart problem, B.P, Type 2 Diabetes, Respiratory issues
Mental health issues Depression, Anxiety, Unnecessary anger and irritation

Result of job burnout:

45% of employees worldwide do not want to work anymore.
46% of employees globally would not recommend their job / profession to their children.
52% of the officers would tell their children to pursue jobs in which they find 'meaning' instead of being completely driven by the pay scale.

Solution to job burnout:

The best way to deal with burnout is prevent it from happening in the first place. Increase self-confidence and belief in ourselves and our abilities. Educate ourselves about our work/business. Do self- introspection to improve our capacity. Forget forever promotion aspect is the best way for Superintendents mentioned above.
What employers do to rectify job burnout: Grant at least one promotion to Superintendents in GST and Central Excise. Connect employees to purpose of work, Grant employees the feeling of being heard and encourage people to recharge.

மதுரை பாண்டிசாமியும், தலை வெட்டி முனியப்பனும் / புத்தரே...

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்,
உதவி ஆணையர்,
(சுங்கம் புள்ளியியல் துறை), திருச்சி.

மெட்ராஸ் உயர்நீதிமன்றம் கடந்த ஆகஸ்ட் மாதம் தொல்லியல் துறைக்கு சேலம், பெரியேரி கிராமம், கோட்டை ரோட்டிலுள்ள தலை வெட்டி முனியப்பன் கோவிலை அவர்களது பராமரிப்பில் வைத்துக் கொள்ள உத்தரவிட்டது. மேலும் முனியப்பன் சிற்பம் ஆய்வு செய்யப்பட்டு அது புத்தர் சிலை தான் என நீதிபதி தெரிவித்துள்ளார்.

மதுரைக்கு அருகிலுள்ள பாண்டிக்கோவிலும் தலை இல்லாத புத்தர் சிலையில் காலப்போக்கில் மிரட்டும் கண்களுடன் வேறொரு தலை ஒட்டப்பட்டு பாண்டி முனியாக வணங்கப்படுகிறார்.

புத்தருக்கே சாக்கியமுனி என்றொரு பெயர் இருந்தது, இங்கு குறிப்பிடத்தக்கது .

மதுரை தென்கரை, திண்டுக்கல்லில் பழனி , அம்மைய நாயக்கனுர், சிவகங்கை, திருபுவனம், மல்லல், குன்றக்குடி, விருதுநகர், மன்னார் கோட்டை மற்றும் ராமநாதபுரம், திருவாடானையிலுள்ள சூரம்புலி அருகேயுள்ள செம்பிலான் குடியில் நவகண்ட சிற்பங்கள் கண்டுபிடிக்கப்பட்டுள்ளன.

வீரர்கள் போரில் தன் அரசனுக்கு வெற்றி கிடைக்கவும், ஊரின் நன்மைக்காகவும், கொற்றவை, காளி தெய்வங்களை வேண்டிக்கொண்டு அவர்கள் முன்பாக தங்கள் தலையை வாளால் வெட்டி அத்தெய்வங்களுக்கு காணிக்கையாக கொடுப்பார்கள். இந்த முரட்டு வழிபாடு தலைப்பலி, நவகண்டம் என்றழைக்கப் படுகிறது.

இவ்வாறு நாட்டிற்க்காக காணிக்கை தரும் வழக்கத்தை உதிரப்பட்டி என்பார்கள் . அவ்வாறு இறந்தவர்களை "சாவான்சாமி" என வணங்குவார்கள்.

நவகண்டம் பற்றிய செய்திகள்சிலப்பதிகாரம், கலிங்கத்துப்பரணி, தக்கயாகப் பரணியில் காணப்படுகின்றன. நாட்டுக்காக உயிர் துறத்தலை தொல்காப்பியம் அவிப்பலி என்று பதிந்துள்ளது.

இவ்வாறு நாட்டிற்காக தலை தந்தவர்களின் / நாட்டு மக்களுக்கு நல்ல நிலை தந்தவர்களின் சிலைகளின் தலை பகுதி மாற்றப்பட்டு மக்களை குழப்பி ஒரு கூட்டம் எப்போதும் போல் பணம் பறிக்கிறது.

रजनीश कुमार मिश्रा, निरीक्षक,
कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त
- कहानी

मोहन की सूझबूझ

एक गाँव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था। मोहन के पिता किसान थे और कृषि ही उनकी आय का एक मात्र स्रोत था। मोहन प्रतिभाशाली एवं होनहार छात्र था और गांव के पास में ही स्थित सरकारी स्कूल में ही पढ़ता था। स्कूल से आने के बाद, मोहन कृषि कार्य में अपने पिता की मदद किया करता था। एक दिन मोहन के पिता ने बताया कि समय के साथ कृषि लागत बढ़ती जा रही है जबकि उपज में लगातार कमी हो रही है. इससे किसानों की आर्थिक स्थिति दयनीय होती जा रही है। मोहन के गाँव के लोग फसल कटाई के बाद बचे हुए डंठल को खेत में जला दिया करते थे। उनका यह मानना था कि डंठल जलाने से खेत में खरपतवार नहीं उगते और साथ ही डंठल की राख खेत की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है।

एक दिन मोहन के स्कूल में एक कृषि विशेषज्ञ आये हुए थे। उन्होंने बताया कि मिट्टी में कई प्रकार के जीवाणु पाये जाते है जो मिट्टी की उर्वराशक्ति को बढ़ाते है। खेत में डंठल जलाने से इनकी मृत्यु हो जाती है जो कि मिट्टी के लिए नुकसानदायक होता है। साथ ही डंठल जलने से वायु प्रदूषण होता है जो कई बीमारियों को जन्म देता है। कृषि विशेषज्ञ ने मिट्टी (मृदा) स्वास्थ्य कार्ड के बारे में भी बताया जो मृदा की जरूरत के अनुसार उर्वरक के प्रयोग को बढ़ावा देता है। कृषि विशेषज्ञ की बात सुनकर मोहन को अपने गाँव वालों की गलती का अहसास हुआ और उसने यह निश्चय किया कि वह अपने गाँव में डंठल जलाने के चलन को बंद करायेगा। मोहन ने घर पहुँचकर अपने पिता जी को इसके बारे में बताया। अगले दिन गाँव में एक बैठक हुयी जिसमें मोहन ने डंठल जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताया और लोगों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के बारे में भी बताया। गाँव के लोगों ने भविष्य में डंठल न जलाने, मृदा कार्ड बनवाने का निश्चय किया। इस कदम से कृषि उपज पहले की तरह होने लगी साथ ही बायु प्रदूषण के स्तर में भी गिरावट आयी। गाँव के लोग फिर से खुशहाली से रहने लगे।

प्रेम कुमार मीना,अधीक्षक

कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त कहानी

अगले जन्म मोहे बिटिया ना कीजो

दिनेशजी और सुशीलाजी राजस्थान के एक छोटे से गांव के निवासी हैं। उनके एक बेटा सुशील व एक बेटी पूर्णिमा थी। बेटे, सुशील को पढ़ाई लिखाई पसंद नहीं थी। बेटी पूर्णिमा, पढाई में हमेशा प्रथम स्थान पर रहती थी। कुछ वर्षों के बाद सुशील ने पाँचवी पास कर पढ़ाई छोड़ दी। पूर्णिमा कालेज में फाइनल वर्ष में पहुँच कर अपना स्टार्टअप भी शुरू कर चुकी थी।

बेटा सुशील 27 साल का हो चुका था और दिनेशजी को उसकी शादी की चिंता होने लगी थी क्योंकि कोई भी कम पढ़े-लिखे लड़के से अपनी बेटी की शादी नहीं करना चाहता था। दो साल तक कई रिश्ते देखने के बाद भी कोई बात नहीं बनी।
एक दिन गाँव के रामू ने एक लड़की का रिश्ता बताया, वे लोग शादी के लिए तैयार हो गए लेकिन लड़की वालों की एक शर्त थी। रामू ने बताया कि वो आटा-साटा प्रथा से शादी करना चाहते है जिसके अनुसार, सुशील की शादी के लिए पूर्णिमा की शादी सुशील की होने वाली पत्नी के चाचा से करनी होगी। दिनेशजी ने बिना पूर्णिमा की मर्जी के शर्त स्वीकार करली। अब पूर्णिमा की शादी ऐसे व्यक्ति से हो चुकी थी जो उम्र में उससे बीस साल बड़ा था अनपढ़ था व बकरियाँ चराता था। ससुराल में पति के द्वारा बहुत सी यातना दिए जाने के बाद भी पूर्णिमा चुप रहती थी क्योंकि अगर पूर्णिमा शादी तोड़ देती तो पूर्णिमा के भाई की शादी भी टूट जाती। परंतु आखिर में पूर्णिमा का सब्र जवाब दे गया। उसने कुए में कूद कर आत्महत्या कर ली। अपने सुसाइट नोट में आत्महत्या का जिम्मेदार समाज व आटा-साटा कुप्रथा को बताया जिसमें लडकियों को जिंदा मौत मिलती है।

नोट: यह एक कुप्रथा है जो राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में महिला लिंगानुपात के चलते बंद नहीं हो रही है। सरकार द्वारा इसकी रोक के लिए सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं।

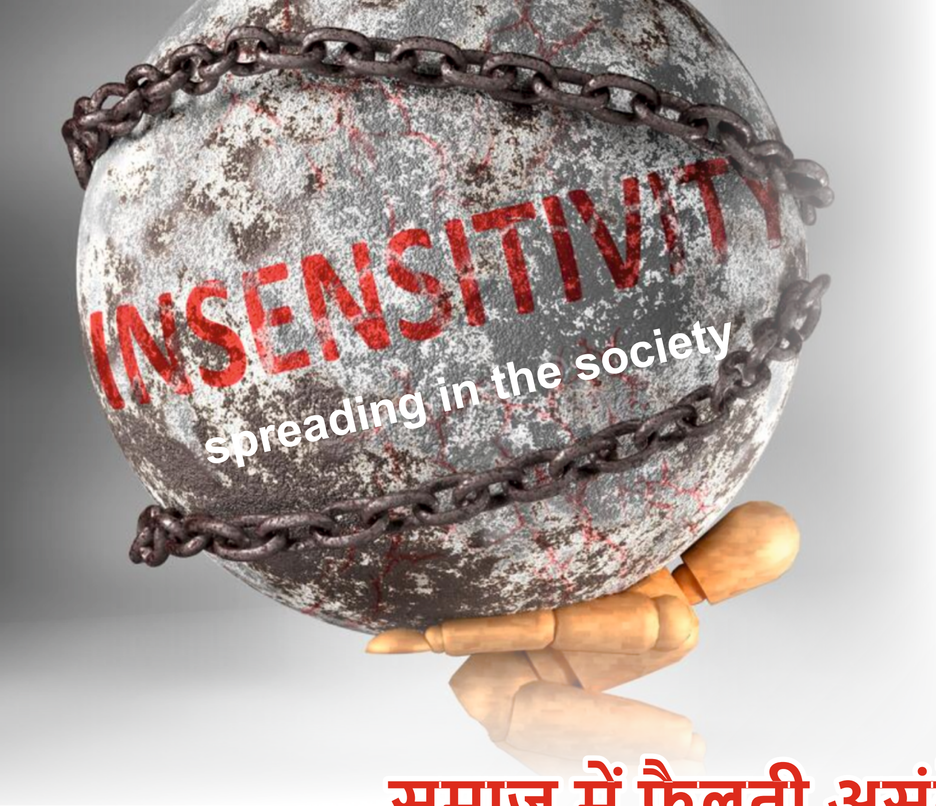

संजीव कुमार , अधीक्षक

कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त
- कहानी

समाज में फैलती असंवेदनशीलता

वर्तमान समय में शॉर्ट वीडियो काफी प्रचलन में है। लोग इनको काफी पसंद करते हैं। वीडियो प्रस्तुत करने वाला एक दो मिनट में ही अपनी बात पूरी तरह से स्पष्ट कर देता है। इस काम में लिप्त एक व्यक्ति 'संकेत' बहुत ही लोकप्रिय है जिसकी वीडियो को लोग पसंद करते हैं। एक बार उसे किसी स्रोत से पता चलता है कि 'किरानपुर नामक ग्राम में पंचायत किसी मसले पर अपना फैसला सुनाने वाली है। संकेत उसे कवर करने उस ग्राम में जाता है।

पंचायत उस ग्राम की एक महिला को सिर मुंडवा कर पूरे गाँव में चलने का फैसला सुनाती है। इस महिला का कसूर बस इतना ही था कि उसके मोहल्ले में पिछले कुछ वर्षों में कुछ लोगों की आकस्मिक मृत्य हो गई थी। ग्रामीणों ने उस महिला पर काला जादू करने का आरोप लगाया और बाद में पंच ने यह निर्णय लिया। फैसला सुनाने के बाद उस महिला को गाँव में घुमाया जाता है। उसी क्रम में कुछ लोग उसे पत्थर मारने लगते हैं। वीडियों बनाने वाला इसका वीडियो बना रहा होता है। अंततः वह महिला पत्थर के वार को सहन नहीं कर पाती है और अपना दम तोड़ देती है। कोई भी उस महिला को बचाने की कोशिश नहीं करता है।

इस घटना को वीडियों बनाने वाला एक छोटी सी क्लिप बना कर अपलोड करता है। लाखों की संख्या में लोग उस वीडियो को देखते हैं फिर भी कोई शख्स उस महिला के परिवार की सुध नहीं लेता है। यह जाने बिना ही कि उस महिला का कोई दोष है भी या नहीं, उसे अपनी जान गंवानी पड़ती है।

इस भागमभाग वाली दुनिया में लोग इतने व्यस्त हैं कि इन धटनाओँ से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। लोग यह मान कर चलते हैं कि ऐसी कोई घटना उनके घर में तो नहीं हुई है इसलिए उन्हें सभी पचड़ों में नहीं पड़ना है। । उस वीडियो क्लिप को देख कर बहुत से दर्शकों ने महिला के पक्ष में भी कमेंट किया पर क्या फायदा? इस तरह की घटना हमें प्रतिदिन सुनने या देखने को मिलती हैं परंतु कितने मामलों में लोग पीड़ित के प्रति सहानभूति दिखा कर सहायता को हाथ बढ़ाते हैं? यह सब हमारे असंवेदनशील होने को प्रदर्शित करता है।

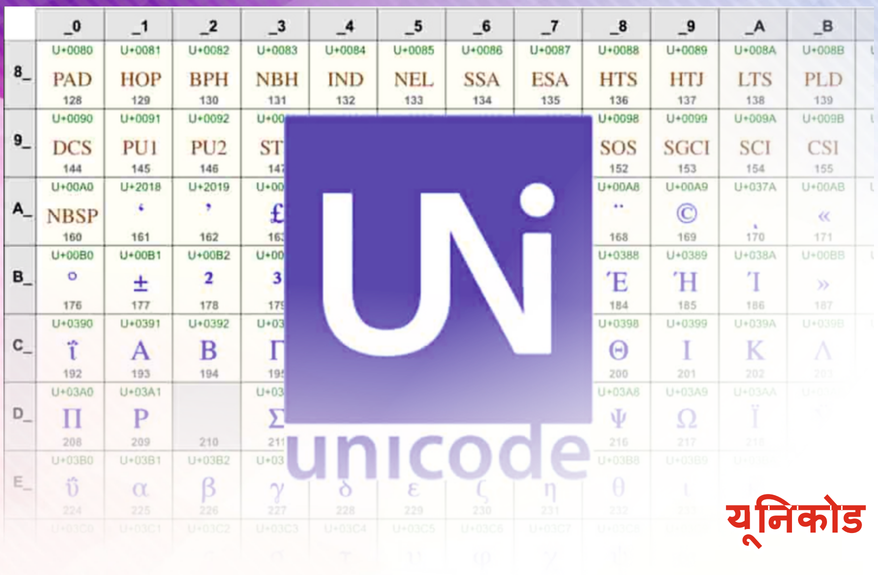

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यूनिकोड

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरुपण के लिए किया जाता है। यूनिकोड कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए, कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेज़ी की तरह ही सरलता से 100%कार्य किया जा सकता है, कम्प्यूटर पर हिंदी मे सभी कार्य जैसे वर्ड प्रोसेसिंग डाटा प्रोसेसिंग ई-मेल वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की वर्ड पर या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं। विंडोज़ में 10 एवं 8 ,7 यूनीकोड सक्रिय करने की विधि निम्नलिखित है:-

Window 7

स्टार्ट में जाकर कंट्रोल पैनल पर क्लिक करें। जिससे सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा। कंट्रोल पैनल में क्लॉक लेंग्युएज एण्ड रीजन पर क्लिक करें।	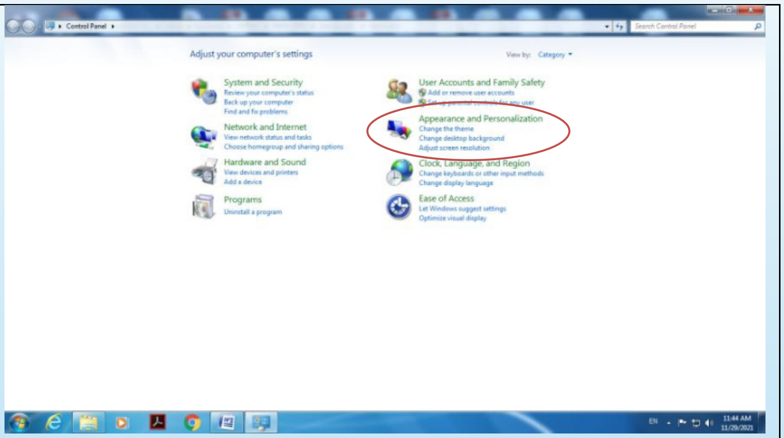
इसके बाद सामने दर्शाए गए पृष्ठ पर रीजन एण्ड लेंग्युएज पर क्लिक करें।	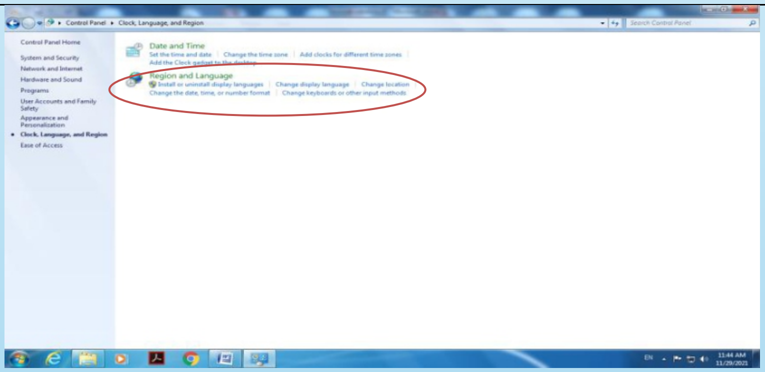

इसके बाद सामने दर्शाए गए पृष्ठ पर कीबोर्डस् एण्ड लेंग्युएजेज पर क्लिक करें।	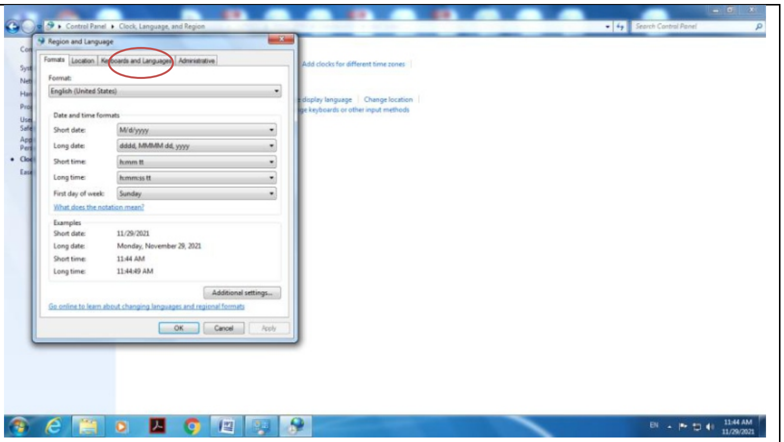
इसके बाद सामने दर्शाए गए पृष्ठ पर चेंज की बोर्डस् पर क्लिक करें।	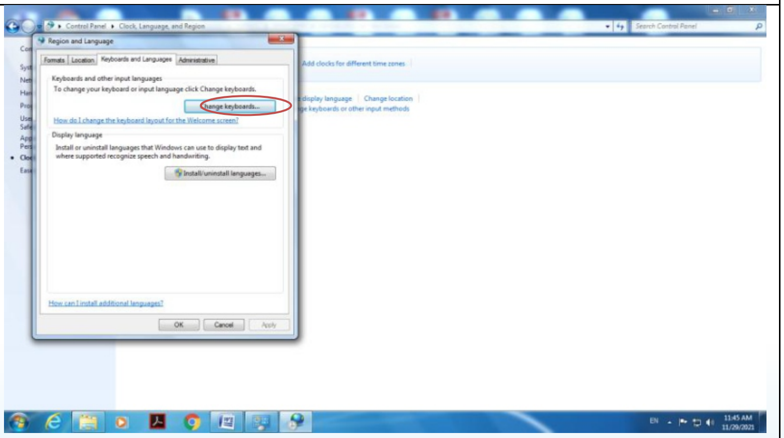
इसके बाद सामने दर्शाए गए पृष्ठ पर ऐड पर क्लिक करें।	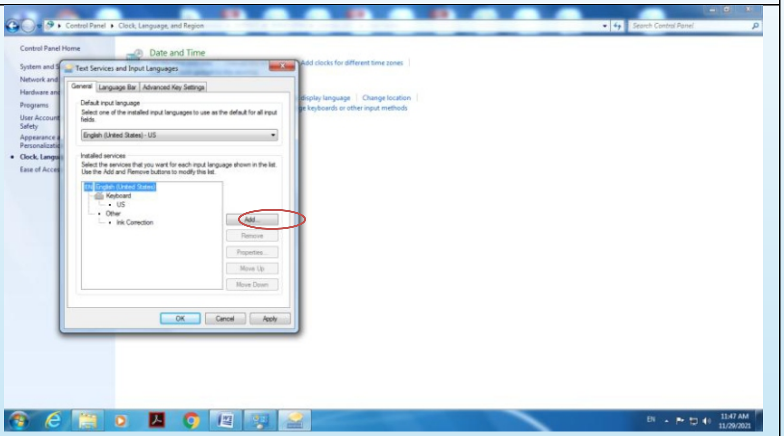
ऐड पर क्लिक करने के बाद बहुत सी भाषाओं की सूची दिखाई देगी उसमें से हिन्दी भाषा के चिन्ह + पर क्लिक करें।	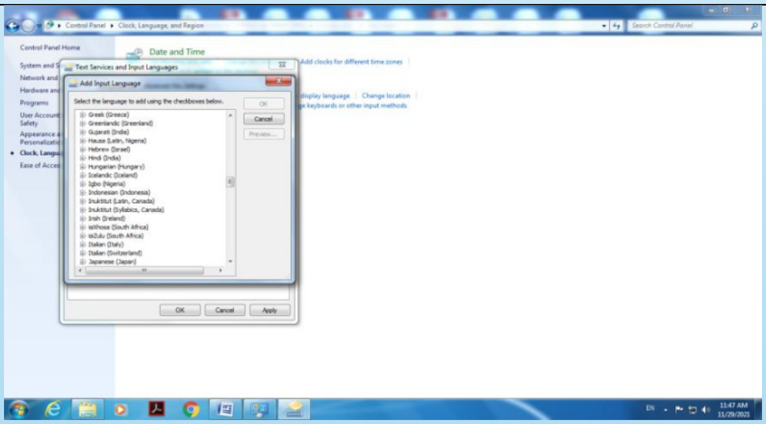

उसमें कीबोर्ड के सामने दर्शाए + चिन्ह पर क्लिक करें।	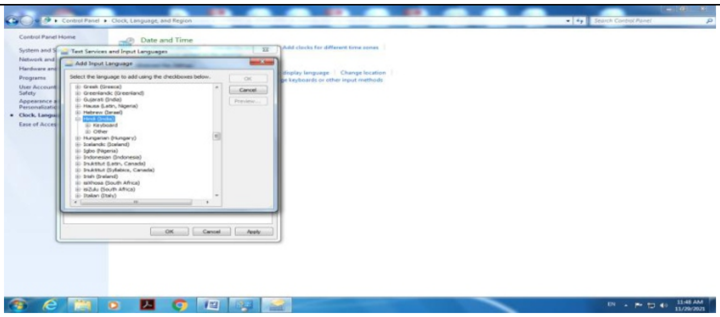
तथा देवनागरी इंस्क्रिप्ट के चिन्ह + पर टिक करें।	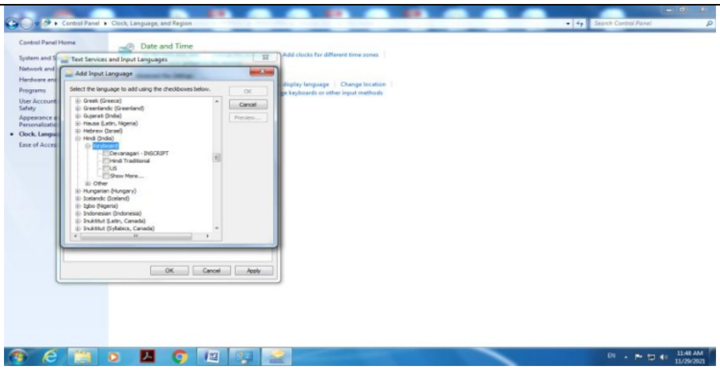
उसके बाद ओके पर क्लिक करें। दुबारा ओके एवं एप्लाई पर क्लिक करें। बस हो गया हिन्दी की बोर्ड सक्रिय।-	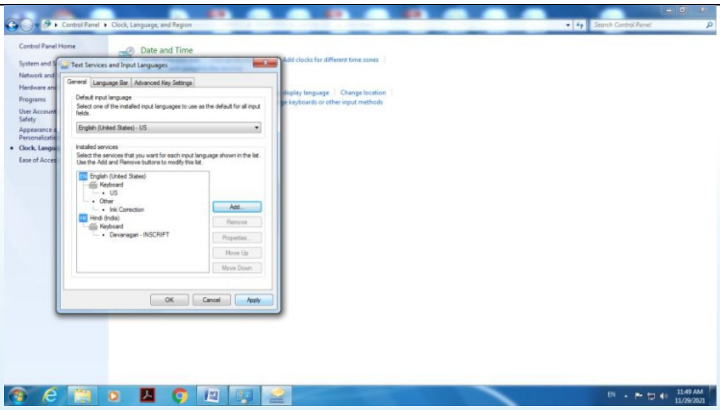

अब आपके कंप्यूटर के टूल बार पर दाहिने तरफ EN दिखाई देगा उस पर क्लिक करके (या Alt+Shift दबाकर) HI सलैक्ट करें । जब टूलबार पर HI दिखाई देगा तब कंप्यूटर में हिन्दी में काम होगा। अंग्रेजी में काम करने के लिए EN पर क्लिक करें या Alt+Shift दबाएं।

नोट – HI (HINDI) और EN (ENGLISH) के बीच टॉगल करने के लिए की-बोर्ड में बाईं तरफ दिए Alt+Shift दबाएं।

इस की-बोर्ड का डिफाल्ट फोंट “मंगल फोंट” है कुछ अन्य फोन्ट में भी काम किया जा सकता है।

Window 8

स्टार्ट में जाकर कंट्रोल पैनल पर क्लिक करें। जिससे सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा। कंट्रोल पैनल में लेंग्युएज पर क्लिक करें।	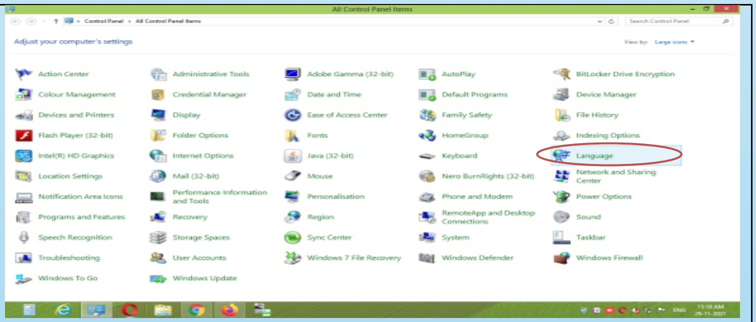

इसके बाद एड लेंग्युएज पर क्लिक करें	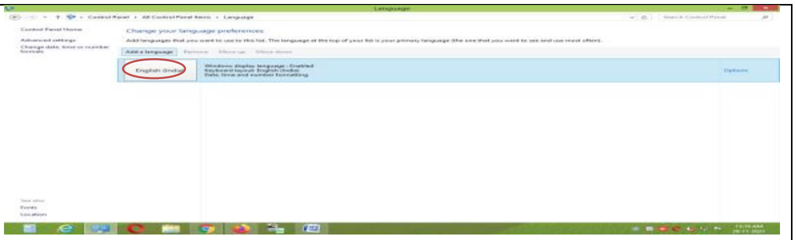
जिससे सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा। इसमें दी गई भाषाओं में से हिंदी पर क्लिक करें।	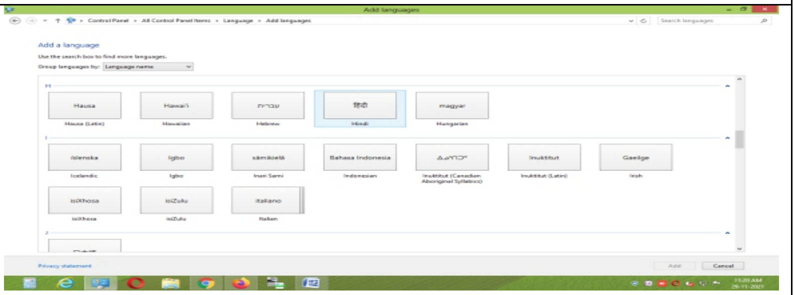
अब एड पर क्लिक करें	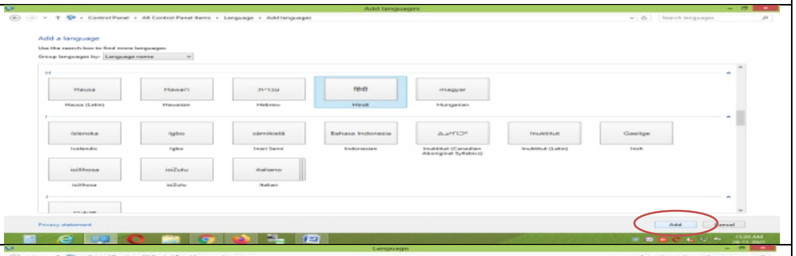
इसके बाद सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा जिसमें हिंदी दिखाई दे रही है। अब इसे बंद करके उपर्युक्त बताए गए तरीके से हिंदी में काम कर सकते हैं।	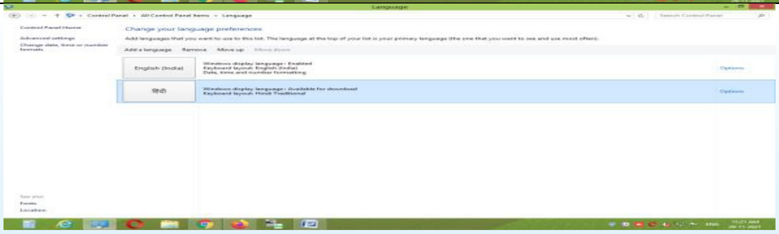

Window 10

स्टार्ट में जाकर कंट्रोल पैनल पर क्लिक करें। जिससे सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा। कंट्रोल पैनल में क्लॉक एंड रीजन पर क्लिक करें।	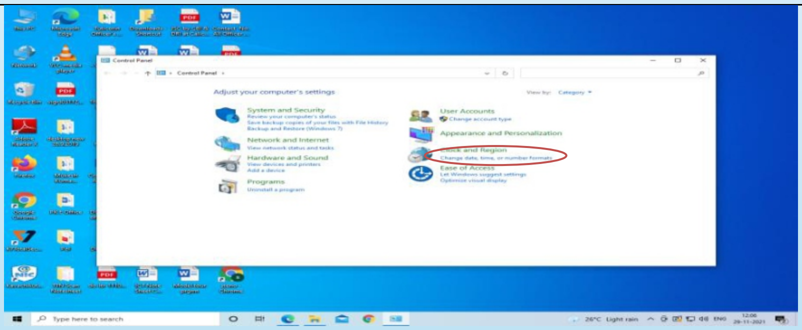
इसके बाद सामने दर्शाया गया पृष्ठ खुलेगा जिसमें रीजन पर क्लिक करें।	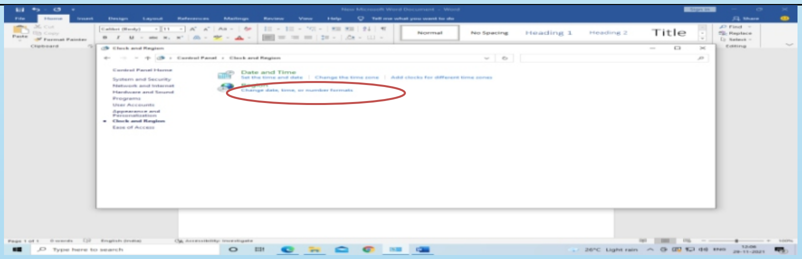

इसके बाद फारमेट में दी गई भाषाओं में से हिंदी सलैक्ट करें

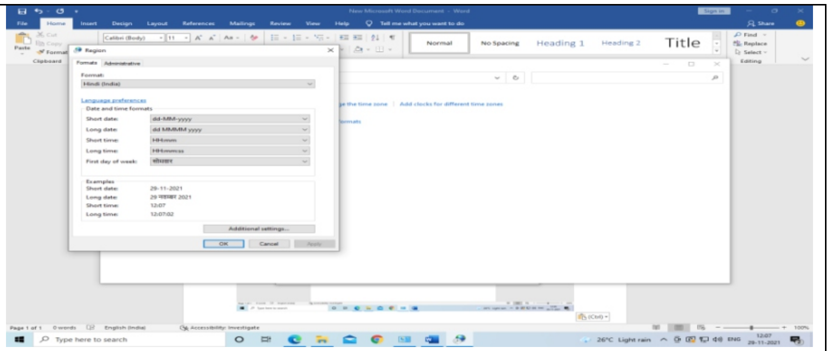

तत्पश्चात एड लेंग्युएज पर क्लिक करें तथा डाउनलोड पर क्लिक करें
डाउनलोड होने के पश्चात शटडाउन करके पुनः खोले अब स्क्रोल बार engपर क्लिक करने से हिंदी भी दिखाई देगी । सलैक्ट करें और हिंदी में काम करें।

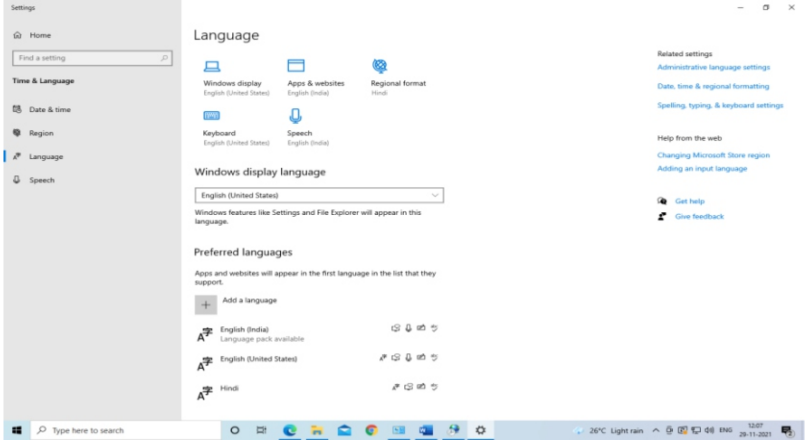

शांति में बाधक-13 दोष (महाभारत: शान्ति पर्व: के आधार पर)

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

काम, क्रोध आदि तेरह दोषों का निरूपण और उनके नाश का उपाय
युधिष्ठिर ने पूछा - भरतश्रेष्ठ! परम बुद्धिमान पितामाह! मनुष्यों को किस दोष के कारण दुःख की प्राप्ति होती है। मनुष्यों की ऊर्जा को क्षीण करने वाले कौन से दोष हैं कृपा करके उनका निरूपण एवं उनके नाश का उपाय बताइए जिससे मानव जाति का उन दोषों से बचाव किया जा सके। भीष्म पितामह ने शरशय्या पर लेटे हुए तनिक शांत होकर 13 दोषों का वर्णन किया जिनसे मनुष्य को प्रयत्न पूर्वक बचना चाहिए।

पितामह ने बताया, राजन्! पहला दोष क्रोध है। जैसे घर में चोरी हो जाए तब भी कुछ समान बचा रह जाता है किन्तु आग लग जाने पर सबकुछ भष्म हो जाता है उसी प्रकार मन में क्रोध उत्पन्न होने पर शान्ति का नाश हो जाता है। क्रोध लोभ से उत्पन्न होता है। लोभ की वस्तु नहीं मिलने पर पैदा हो जाता है। दूसरों के दोष देखने से बढ़ता है , क्षमा करने से थम जाता है और निवृत्त हो जाता है।

दूसरा दोष है – काम, अर्थात कामनाएं अधिक से अधिक पाने की इच्छाएँ। अत्यधिक कामनाओं के कारण मनुष्य को उतनी शांति नहीं मिलती जितनी शांति का मानव हकदार है। कामनाएं संकल्प से उत्पन्न होती हैं । उसका सेवन किया जाय तो बढ़ती हैं और जब बुद्धिमान पुरूष उससे विरक्त हो जाता है, तब वे (कामनाएं) तत्काल नष्ट हो जाती है। सब कामनाओं को पूरी करना किसी के भी वश में नहीं है उनको मिटाया जा सकता है। जरूरी कामनाएं पूरी की जा सकती हैं उनके पूरे करने में प्रकृति मददगार भी होती है। यहाँ आवश्यकता एवं कामनाओँ के भेद को समझ लेना चाहिए। आवश्यकताएं जरूरी होती हैं जिनको पुरुषार्थ से पूरा किया जा सकता है। कामनाएं अनावश्यक होती है जो आजतक किसी की पूरी नहीं हुई हैं। कामनाओँ की उपेक्षा करने से कामनाएं खत्म हो जाती हैं।

तीसरा दोष है परासुता- दूसरों को मारने – काटने का मन में बैर-भाव परासुता दोष होता है। ये क्रोध ओर लोभ सेतथा अभ्यास से उत्पन्न होती है। संपूर्ण प्राणियों के प्रति दया से और वैराग्य से यह निवृत्त हो जाती है। मनुष्य के मन में शांति का संचार हो जाता है।

चौथा दोष है मोह- मोह अज्ञान से उत्पन्न होता है और पाप की आवृति करने से बढ़ता है। विद्वानों और सत्पुरुषों के संग से मोह बदल जाता है और बंदगी का रूप ले लेता है।

पाँचवा दोष है विधित्सा - वेद शास्त्रों में जो लिखा है उसे न मानकर मनमानी करना, विधित्सा दोष है। शास्त्र विरुद्ध कर्म करने की आदत विधित्सा दोष है। न्याय विरुद्ध कर्म करने की आदत विधित्सा दोष है। यह नास्तिक लोगों से संग से पनपता है। बेलगाम जीवन जीने से बढ़ता है। लगाम डालने वाले सदाचारी लोगों के संग से यह दोष मिट जाताहै। इसलिए ऊँचे लोगों का संग करना चाहिए। जो गलत कार्य मनुष्य अकेले में कर सकता वैसा कार्य माता-पिता, गुरुजनोंके समक्ष नहीं कर सकता इसलिए माता-पिता और बड़ों का संग करना हितकर होता है।

छठा दोष है शोक – जिस पर प्रेम हो, उस प्राणी के वियोग से शोक प्रकट होता है। बीती हुई सुविधा, मित्र या परिस्थितियों को याद करने से शोक उत्पन्न होता है। परंतु जब मनुष्य यह समझ ले कि शोक व्यर्थ है- उससे कोई लाभ नहीं है तो विवेक से ज्ञान के विचार से बीती हुई बातों पर ध्यान न देने से शोक का दुर्गुण दूर हो जाता है और मनमें शांति प्रकट हो जाती है।

सातवाँ दोष है मात्सर्य- सत्य का त्याग और दुष्टों का साथ करने से मात्सर्य-दोष की उत्पति होती है। जिससे मनुष्य अशांति की आग में जलता है। श्रेष्ठ पुरूषों की सेवा और संगति करने से उसका नाश हो जाता है।

आठवा दोष है मद- धन का मद, सत्ता का मद, विद्वता का मद, रूपलावण्य का मद से मनुष्य की वास्तविकस्वाभाविकता/शांति चली जाती है। यह मद दोष अभिमान से बढ़ता है। यथार्थ स्वरूप के ज्ञान से यथार्थ सत्संग से मद दोष निवृत्त हो जाता है जिससे चित्त में शांति के द्वार खुल जाते हैं।

नौवा दोष है ईर्ष्या – अपनी कामना की बस्तु खुद को न मिलने तथा दूसरे को मिलने से ईर्ष्या होती है। अपने सेऊँचे पदवाले या धनाड्य को देखकर जलना यह ईर्ष्या है।

यहाँ सोचने वाली बात है कि कोई धनाड्य अपने पुण्य एवं पुरुषार्थ से ऊँचा उठा है तो उसे देखकर जलने से क्या लाभ। मैंने सुना है कि जब बादल में बिजली चमकती है तब कुछ गधे उसमेंदुलत्ती (पीछे की दो लात) मारते हैं ऐसी ही हालत ईर्ष्यालु लोगों की होती है। ईर्ष्या कामना की वस्तु से सुख लेने की वासनासे बढ़ती है लेकिन विवेकशील बुद्धि से इसका नाश हो जाता है। अगर कोई अन्य व्यक्ति कामनापूर्ति की वस्तु का भोगकर रहा है तो हम विवेक करें कि कामनापूर्ति की वस्तु भोग के बाद खत्म हो जाएगी और भोग करने वाला भी खत्म होजाएगा। हम नहीं भोग पा रहे है तो इतनी हमारी ऊर्जा कम खत्म होगी शायद ऐसी ही हरि की इच्छा है। ऐसा सोचने सेईर्ष्या का दोष चला जाता है और चित्त निर्दोष हो जाता है।दसवाँ दोष है निंदा- निंदा द्वेष से होती है। पुराने एक-दूसरे के दुखद वचन याद करने से निंदा दोष उत्पन्न होताहै और भ्रांति से निंदा का दोष बढ़ता है।

श्रेष्ठ पुरुषों का संग करने से श्रेष्ठ संतों के सद्गुण देखने से इस पर नियंत्रण होता है।

ग्यारहवाँ दोष है असूया – दूसरों में दोष देखने की प्रवृत्ति असूया दोष है। जैसे ऑडिट (लेखा-परीक्षा) करते समय क्या ठीक है उस पर ध्यान न देकर गलती पर ही पूरा ध्यान केन्द्रित किया जाता है उसी प्रकार कुछ लोग दूसरों की तमामअच्छाई छोड़कर उसकी कमियाँ निकालते रहते हैं। भैंस ने गाय से कहा लोग तुझे भूरी गाय कहते है देख तेरी पूँछ कितनीकाली है। गाय बोली बहन जरा आईना देख लेती तो खुद का भी पता चल जाता। जो दूसरों के दोष देखते हैं वे अपने नहींदेख पाते, उनके दोष बढ़ जाते हैं। दूसरों के दोष देखने के बजाय उनके गुण देखें, गुण देखने के बजाय उसके अंद र विद्यमान भगवान की सत्ता को निहारें तो दोष देखने की आदत निवृत्त हो जाएगी।बारहवाँ दोष है कंजूसी- कंजूस वह नहीं होता जो बहुत पैसेवाला है या दरिद्र है। कंजूस वह होता है जिसने तमाम धन इकठ्टा किया और सही जगह पर खर्च करने का मौका मिला तो मुठ्ठी नहीं खोलता है। कार्पण्य दोष कंजूसों के संग सेआता है उदार आत्माओँ के साथ रहने से दोष घटता है और दान-पुण्य करने से दोष मिट जाता है। स्वास्थ्य और औदार्यसुख प्रकट होता है।

तेरहवाँ दोष है लोभ- प्राणियों के भोग वैभव देखकर लोभियों का संग करके लोभ दोष बढ़ता है। दान-पुण्य से लोभ निवृत्त होता है। संसार क्षणभंगुर है एक दिन छूट जाएगा ऐसा बार-बार याद करने से यह दुर्गुण दूर हो जाता है।भीष्म पितामह आगे कहते हैँ कि यह तो एक-एक दोष के लिए मैंने एक-एक उपाय बताया है। सभी दोषों को एक साथ दूरकरने का उपाय भी है। वह है शांति - ये तेरहों दोष शांति धारण करने से जीत लिये जाते हैं।

शांति हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

शांति हमारा स्वभाव है। जैसे पानी को हीटर से संपर्क में लाने से वह गर्म हो जाता है और हीटर दूर करने से कुछ समय बाद अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है। पानी को फ्रिज में रखने से बर्फ बनजाता है किन्तु फ्रिज से दूर करने से वह पूर्व स्थिति में आ जाता है। उसी प्रकार क्रोध आने से शांति भंग होती है क्रोध गया तो फिर हम शांत, लोभ आया शांति भंग, लोभ गया फिर शांति स्थापित हो जाती है। इस प्रकार इन दुर्गुणों के मन मेंरहने तक हमारी शांति भंग होती है दुर्गुणों के दूर होते शांति स्वाभाविक आ जाती है। अतः शांति हमारा स्वभाव है इसे पाने के लिए किसी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं बस, दुर्गुणों से बचने की जरूरत है। ऐसा कोई सामर्थ्य नहीं जो हमें शांति सेप्राप्त नहीं हो सकता। शांति धन से बड़ी है, शांति सत्ता से बड़ी है तथापि मानुष्य उपर्युक्त दोषों में सुख ढूँढ़ता है।

वर्ष 2022 में मासिक हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार वर्ष 2022 में सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि में मासिक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में पुरस्कार विजेताओं के नाम निम्नलिखित हैं:-

प्रतियोगिता का नाम	महीना	विजेताओं के नाम एवं पदनाम (श्री / श्रीमती/सुश्री)	पुरस्कार
हिंदी लघु कहानी लेखन प्रतियोगिता	जनवरी 2022	रजनीश कुमार मिश्रा, निरीक्षक	I
		प्रेम कुमार मीना, अधीक्षक	II
		संजीव कुमार, अधीक्षक	III
सुलेखन प्रतियोगिता	फरवरी 2022	अनुराधा पी , अधीक्षक	I
		डी विजयलक्ष्मी व.तक.सहायक.	II
		एस अनीस फातिमा, निरीक्षक	III
पोस्टर बनाना प्रतियोगिता	मार्च 2022	अनुराधा पी , अधीक्षक	I
		केशव देव , निरीक्षक,	II
		पिंटू कुमार, नरीक्षक	III
हिंदी टंकण प्रतियोगिता	अप्रैल 2022	संतोष कुमार कुशवाहा, आशुलिपिक	I
		मुकेश कुमार आशुलिलिपिक,	II
		महेन्द्र कुमार वर्मा , कर सहायक	III
हिंदी वाक्य रचना प्रतियोगिता	मई 2022	रवि रंजन कुमार, निरीक्षक	I
		पिंटू कुमार, नरीक्षक	II
		दिनेश प्रजापत, नरीक्षक	III
हिंदी वाक्य रचना प्रतियोगिता तमिल) भाषी अधिकारियों क (लिए	जून 2022	एस अनीस फातिमा, निरीक्षक	I
		जी वेंकटसुब्रमणियन, अधीक्षक	II
		डी विजयलक्ष्मी व.तक.सहायक.	III
हिंदी वाक्य सुधार प्रतियोगिता	अगस्त 2022	महेन्द्र कुमार वर्मा, कर सहायक	I
		मोनिका रानी, निरीक्षक	II
		संतोष कुमार, अधीक्षक	III

चित्रकारी (Drawing)

कुमारी सिमरन कुमारी पुत्री
श्री नवलेश प्रजापति, निरीक्षक

राजू प्रजापति पुत्र श्री नवलेश
प्रजापति, निरीक्षक

श्रवणकुमार पुत्र श्री
सुरेश कुमार, अधीक्षक

कनिष्क सम्यक
पुत्र श्री संतोष कुमार, अधीक्षक

चित्रकारी (Drawing)

यादवी सम्यक
पुत्री श्री संतोष कुमार, अधीक्षक

कुमारी वी. सुभाषिनी, पुत्री
श्री एल विजयराघवन, अधीक्षक

एन. वाकिनी देवी पुत्री श्रीमती
ए. सुंगधी, हेड हवलदार

कुमारी वी संजूश्री पुत्री श्री
एस विजय कुमार, अधीक्षक

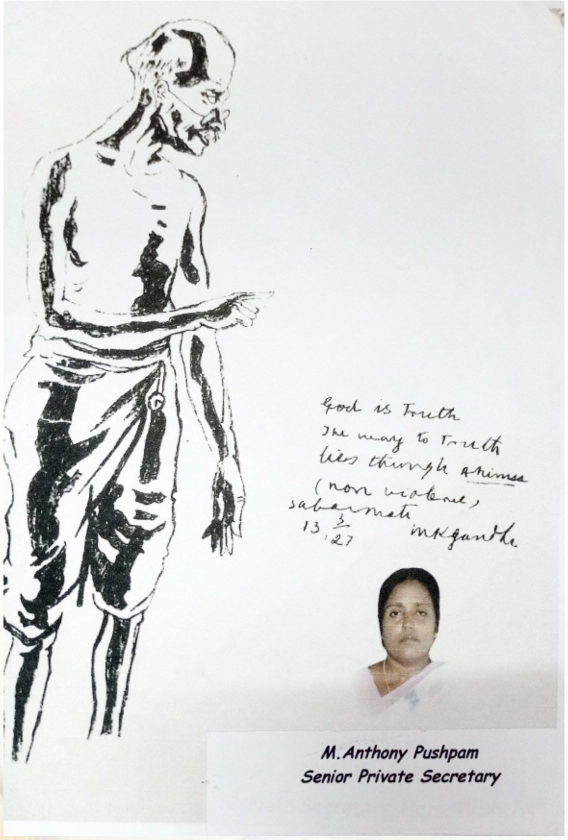

M.Anthony Pushpam
Senior Private Secretary

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुचिरापल्लि।

मंच पर आसीन है- बाई तरफ श्री सुधीर कुमार मिश्र, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, बीएचईएल, तिरुचिरापल्लि (विशिष्ट अतिथि) मध्य में डॉ. उमा शंकर प्रधान मुख्य आयुक्त (मुख्य अतिथि) दाईं ओर श्री विकास नायर, अपर आयुक्त सीमा शुल्क।

प्रतिभागी बच्चों के साथ डॉक्टर उमा शंकर, प्रधान मुख्य आयुक्त।

सभा को संबोधित करते हुए श्री विकास नायर, अपर आयुक्त।

धन्यवाद ज्ञापन देते हुए श्री एन. प्रदीप , संयुक्त आयुक्त।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

श्री विकास नायर,
अपर आयुक्त,
पुरस्कार वितरण करते हुए।

हिंदी पखवाड़ा
समारोह में शामिल
अधिकारी।

श्री ए. दिलीबन,
संयुक्त आयुक्त पुरस्कार
वितरण करते हुए।

डॉ. प्रवीण गवास्कर, उपायुक्त पुरस्कार वितरण करते हुए।

श्रीमती शालिनी सुष्मिता के., उपायुक्त, पुरस्कार वितरण करते हुए।

न.रा.का.स. की संयुक्त हिंदी प्रतियोगिता

संगीत प्रतियोगिता में भाग लेते हुए श्रीमती शालिनी सुष्मिता के., उपायुक्त

संगीत प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती शालिनी सुष्मिता के., उपायुक्त

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि।

मंच पर आसीन है
श्री एन राम कुमार,
अपर आयुक्त एवं श्रीमती
वरलक्ष्मि एस,
संयुक्त आयुक्त।

श्री एन. रामकुमार,
अपर आयुक्त , पुरस्कार
वितरण करते हुए।

श्रीमती वरलक्ष्मि
एस. संयुक्त आयुक्त,
पुरस्कार वितरण
करते हुए।

श्री दिनेश के चक्रवर्ती , आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुकुडी के नेतृत्व में स्वच्छता पखवाड़ा 2022 का आयोजन

साइकिल रैली

रैली को रवाना करते हुए डॉ उमा शंकर,
प्रधान मुख्य आयुक्त!

रैली की अगुवाई करते हुए श्री. डी. अनिल, आयुक्त सीमा शुल्क, श्री वी एस वेंकटेश्वरन, अपर आयुक्त,सीमा शुल्क श्री ए दिलीबन, संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क।

योग दिवस

योग दिवस के अवसर पर सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुचिरापल्ली के अधिकारियों को संबोधित करते हुए डॉ उमा शंकर प्रधान मुख्य आयुक्त।

वाकथन में भाग लेते हुए सीमा शुल्क मुख्यालय के अधिकारी

श्री दिनेश के चक्रवर्ती,
आयुक्त, दीप प्रज्वलित
करते हुए

श्री एन. राम कुमार,
अपर आयुक्त,
दीप प्रज्वलित करते हुए

श्रीमती वरलक्ष्मि, एस संयुक्त
आयुक्त खादी प्रदर्शनी का
उद्घाटन करते हुए

श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि को गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए सीमा शुल्क मुख्यालय के अधिकारी।

श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि का स्वागत करते हुए श्री डी. अनिल, आयुक्त, सीमा शुल्क तिरुच्चिराप्पल्लि।

श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि का स्वागत करते हुए श्री पी. राम मोहन, अपर आयुक्त एवं डॉ प्रवीण गवास्कर, उपायुक्त, सीमा शुल्क तिरुच्चिरापल्लि।

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन तिरुच्चिराप्पल्लि का प्रभार ग्रहण करते हुए श्रीमती जेन के. नथानियेल, मुख्य आयुक्त,

Veda Vidya Printers, Srirangam. Cell : 94861 65309